पत्र सूचना शाखा

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

उत्तर प्रदेश प्राविधिक विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

लखनऊः 12 जनवरी, 2015

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल एवं कुलाधिपति, श्री राम नाईक ने आज उत्तर प्रदेश प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ के 12वें दीक्षान्त समारोह में पीएच0डी0, एम0टेक0, एम0फार्मा0, एम0बी0ए0, एम0सी0ए0, बी0टेक0, बी0फार्मा, बी0आर्क0, बैचलर आफ होटल मैनेजमेंट एण्ड कैटरिंग, बी0फैड0 आदि की उपाधि व स्वर्ण, रजत एवं कास्य पदक प्रदान किये। समारोह में विख्यात परमाणु वैज्ञानिक, पद्म विभूषण प्रो0 अनिल काकोदकर को मानद् उपाधि से भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रदेश के प्राविधिक शिक्षा मंत्री, डाॅ0 शिवाकांत ओझा भी उपस्थित थे।

राज्यपाल ने उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि उपाधि प्रदान करते समय जो शपथ उन्हें दिलायी गयी है उसके अनुरूप आचरण का पालन करें। उपाधि प्राप्त करने के बाद कड़ी स्पर्धा उनके सम्मुख है। जो कड़ी मेहनत करेगा वहीं आगे बढेगा। उन्होंने कहा कि कड़ी स्पर्धा में सफल होने के लिये व्यक्तित्व विकास जरूरी है।

श्री नाईक ने कहा कि हमारे देश में लगभग 700 विश्वविद्यालय है तथा 35,000 महाविद्यालय हैं परन्तु हम विश्व के प्रतिष्ठित 200 विश्वविद्यालयों/संस्थानों में अपना स्थान नहीं बना पाये हैं। वर्तमान स्थिति को देखकर हमें अपनी शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि शिक्षा में गुणवत्ता प्रदान किये जाने हेतु वे प्रयास कर रहे हैं। इस संबंध में राजभवन में विगत दिनों एक बैठक बुलाई गयी थी जिसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय भी लिये गये। उन्होंने व्यक्तित्व विकास के लिए अपने गुरू द्वारा दिये गये मंत्र को छात्र-छात्राओं से साझा भी किया।

प्रदेश के प्राविधिक शिक्षा मंत्री, डाॅ0 शिवाकांत ओझा ने उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि उपाधि का उपयोग जनसेवा के लिए करें। टेक्नोलाॅजी के बिना प्रगति नहीं हो सकती। युवा नई टेक्नोलाॅजी का विकास करें जो गांव, किसान और युवाओं के लिए उपयोगी हो। उन्होंने कहा कि आज के दीक्षान्त समारोह में उपस्थित प्रो0 काकोदकर से प्रेरणा प्राप्त कर प्रदेश एवं देश का नाम रोशन करें।

पद्म विभूषण, प्रो0 अनिल काकोदकर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे विश्वविद्यालय और विशेषकर टेक्निकल विश्वविद्यालय देश के विकास में महति योगदान दे सकते हैं। उन्होंने नवान्वेषणों की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि नयी पीढ़ी में ऐसे भाव स्थापित करने की जरूरत है। हम भारतीय महान परम्परा के संवाहक है। उन्होंने कहा कि पूर्व में भारत में अनेक ऐसे विश्वविद्यालय तथा ज्ञान के केन्द्र थे जिसमें विदेश के लोग भी शिक्षा ग्रहण करने आते थे।

दीक्षान्त समारोह में कुलपति, प्रो0 आर0के0 खाण्डल ने वार्षिक प्रगति रिपोर्ट व कार्यविधि प्रस्तुत की।

Uttar Pradesh Technical University
12th Convocation
Time: 10:00 AM

उत्तर प्रदेश प्राविधिक विश्वविद्यालय
Uttar Pradesh Technical Univers
द्वादश दीक्षान्त समारोह
12th Convocation

उत्तर प्रदेश प्राविधिक विश्वविद्यालय